

中外传世

儿童故事

中国

成语故事

上

珍藏版

ZHONGGUOCHENGYUYUGUSHI(SHANG)

了知 / 编



中国少年儿童出版社

了之編

成語故事(上)

中外傳世兒童故事



中國少年兒童出版社

图书在版编目(CIP)数据

中国成语故事/了之编. —北京:中国少年儿童出版社, 2002. 1

(中外传世儿童故事)

ISBN 7-5007-5916-9

I. 中... II. 了... III. 汉语—成语—故事—少年读物 IV. H136.3

中国版本图书馆CIP数据核字(2001)第084336号

ZHONGGUO CHENGYU GUSHI



出版发行: 中国少年儿童出版社

出版人:

编者: 了之 配图: 文远 装帧设计: 周建明
责任编辑: 张彤 美术编辑: 周建明
责任校对: 刘占生 责任印务: 书慧

社址: 北京东四十二条21号 邮政编码: 100708
电话: 086-010-64032266 传真: 086-010-64012262
24小时销售咨询服务热线: 086-010-84037667

印刷: 山东新华印刷厂德州厂 经销: 新华书店

开本: 787×970 1/32 印张: 31.75 插页: 8
2002年1月山东第1版 2002年1月山东第1次印刷
字数: 533千字 印数: 1—13500套

ISBN 7-5007-5916-9/H·2 定价: 32.00元

图书若有印装问题,请随时向本社出版科退换。
版权所有,侵权必究。

编者说明

为了满足广大少年儿童的不同需要,本社选编了这套《中外传世儿童故事》丛书。本书在选编过程中,得到许多作者的帮助和支持,在此谨表示衷心的感谢。

需要特别说明的是,由于部分作者的工作单位和通讯地址不详,编者一时未能和作者取得联系,我们恳请作者对此能予以谅解,并请与出版社取得联系,以便办理相关合同、寄送稿费和样书的事宜。

目录



CONTENTS

一画

- | | |
|----|-----------|
| 1 | 一匡天下 |
| 3 | 一字之师 |
| 5 | 一片丹心 |
| 8 | 一片冰心 |
| 11 | 一发千钧 |
| 14 | 一日三秋 |
| 16 | 一叶知秋 |
| 18 | 一傅众咻 |
| 20 | 一去不复返 |
| 24 | 一夫当关,万夫莫开 |

二画

- | | |
|----|------|
| 26 | 刀山剑树 |
|----|------|

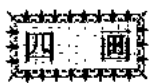
目录

CONTENTS

- | | |
|----|-----------|
| 28 | 了如指掌 |
| 29 | 人面桃花 |
| 32 | 人非木石 |
| 34 | 人杰地灵 |
| 37 | 人言可畏 |
| 39 | 人微权轻 |
| 42 | 人事代谢 |
| 44 | 人琴俱亡 |
| 46 | 人非圣贤,孰能无过 |
| 48 | 二三其德 |
| 50 | 二者必居其一 |
| 52 | 八斗之才 |
| 55 | 力不从心 |
| | 三 |
| 57 | 三朝元老 |
| 58 | 三户亡秦 |
| 60 | 三令五申 |
| 63 | 寸木岑楼 |
| 65 | 大笔如椽 |
| 66 | 大惊失色 |
| 68 | 大材小用 |
| 71 | 大逆不道 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|---|
| 74 | 大事不糊涂 |
| 76 | 大谬不然 |
| 77 | 下笔成章 |
| 78 | 工欲善其事,必先利其器 |
| 79 | 与人为善 |
| 80 | 万马齐喑 |
| 83 | 万籁俱寂 |
| 85 | 万紫千红 |
| 87 | 万寿无疆 |
| 89 | 万无一失 |
| 91 | 千人所指 |
| 93 | 千锤百炼 |
| 95 | 千里无鸡鸣 |
| 98 | 马革裹尸 |
| 101 | 才气过人 |
| 104 | 飞黄腾达 |
| 106 | 飞将奇数 |
| 108 | 小心翼翼 |
| 109 | 子系中山狼,得志便猖狂 |
| |  |
| 111 | 不堪回首 |
| 113 | 不可救药 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|-----------|
| 115 | 不知所措 |
| 117 | 不时之需 |
| 119 | 不求闻达 |
| 122 | 不念旧恶 |
| 125 | 不入虎穴,焉得虎子 |
| 128 | 不远千里 |
| 130 | 不违农时 |
| 133 | 不合时宜 |
| 134 | 不足回旋 |
| 135 | 不识时务 |
| 136 | 不拘小节 |
| 137 | 不觉技痒 |
| 139 | 不修边幅 |
| 141 | 不耻下问 |
| 142 | 开天辟地 |
| 144 | 开云见日 |
| 146 | 开门揖盗 |
| 148 | 无出其右 |
| 150 | 无人问津 |
| 152 | 无可奈何花落去 |
| 154 | 天翻地覆 |
| 156 | 天高地迥 |
| 158 | 天伦之乐 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|------------|
| 160 | 天上人间 |
| 163 | 少见多怪 |
| 164 | 日近长安远 |
| 166 | 日暮途穷 |
| 168 | 反求诸己 |
| 170 | 乌合之众 |
| 171 | 牛角挂书 |
| 173 | 牛鬼蛇神 |
| 176 | 以暴易暴(不食周粟) |
| 178 | 以逸待劳 |
| 180 | 历历在目 |
| 183 | 为人作嫁 |
| 185 | 尺短寸长 |
| 187 | 韦编三绝 |
| 189 | 今是昨非 |
| 193 | 比翼齐飞 天长地久 |
| 195 | 火树银花 |
| 197 | 井底之蛙 |
| 199 | 王侯将相 |
| 202 | 分我杯羹 |
| 204 | 见利忘义 |
| 206 | 从长计议 |
| 208 | 五风十雨 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|--|
| 210 | 长斋绣佛 |
| 213 | 长驱直入 |
| 215 | 水滴石穿 |
| 217 | 水天一色 |
| 218 | 风雨飘摇 |
| 220 | 风烛残年 |
| 222 | 风鬟雾鬓 |
| 224 | 切磋琢磨 |
| 227 | 凤凰在笄 |
| 229 | 车载斗量 |
| 231 | 心悦诚服 |
| 233 | 心有灵犀一点通 |
| 236 | 太公钓鱼,愿者上钩 |
| 238 | 文武之道,一张一弛 |
| |  |
| 240 | 厉兵秣马 |
| 242 | 东窗事发 |
| 244 | 东扶西倒 |
| 246 | 功德无量 |
| 248 | 史不绝书 |
| 250 | 失之毫厘,谬之千里 |
| 252 | 白云孤飞 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|-----------|
| 253 | 白云苍狗 |
| 254 | 白头如新 |
| 256 | 包藏祸心 |
| 257 | 包羞忍耻 |
| 261 | 古调不弹 |
| 263 | 鸟革翬飞 |
| 265 | 瓜田李下 |
| 267 | 叱咤风云 |
| 270 | 正襟危坐 |
| 272 | 付之一炬 |
| 274 | 仙山琼阁 |
| 276 | 去住两难 |
| 278 | 四海为家 |
| 280 | 四体不勤,五谷不分 |
| 282 | 对酒当歌 |
| 284 | 石破天惊 |
| 287 | 左顾右盼 |
| 290 | 左右逢源 |
| 292 | 生灵涂炭 |
| 294 | 出山泉水 |
| 296 | 出奇制胜 |
| 299 | 宁为玉碎,不为瓦全 |

目录

CONTENTS

六 画

- | | |
|-----|---------------|
| 301 | 朽木粪土(听其言而观其行) |
| 302 | 老嫗能解 |
| 303 | 扞虱而谈 |
| 305 | 过犹不及 |
| 306 | 安土重迁 |
| 308 | 安然无恙 |
| 310 | 安如泰山 |
| 313 | 齐东野语(岌岌可危) |
| 315 | 齐大非偶 |
| 317 | 闭门思过 |
| 319 | 讳莫如深 |
| 321 | 衣绣夜行(沐猴而冠) |
| 323 | 先人为主 |
| 325 | 先见之明 |
| 326 | 行将就木 |
| 327 | 自怨自艾 |
| 330 | 危如累卵 |
| 332 | 后起之秀 |
| 333 | 优孟衣冠 |
| 336 | 多难兴邦 |
| 338 | 众怒难犯 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|-------------|
| 339 | 合浦珠还 |
| 340 | 刎颈之交 |
| 342 | 阪上走丸 |
| 344 | 异军突起 |
| 346 | 好整以暇 |
| 348 | 好好先生 |
| 350 | 同流合污 |
| 352 | 夙兴夜寐 |
| 354 | 如兄如弟 |
| 355 | 百废俱兴 |
| 357 | 百读不厌 |
| 359 | 百胜难虑敌,三折乃良医 |
| 362 | 壮心不已 |
| 364 | 华屋山丘 |
| 366 | 伤心惨目 |
| 368 | 动辄得咎 |
| 370 | 肉食者鄙 |
| 372 | 耳熟能详 |
| 375 | 光焰万丈 |
| 379 | 机关算尽 |
| 382 | 危急存亡 |
| 384 | 并日而食 |
| 386 | 成也萧何,败也萧何 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|------------|
| 389 | 仰首伸眉 |
| 391 | 红叶题诗 |
| 393 | 红豆相思 |
| 394 | 庆父不死,鲁难未已 |
| | 七 |
| 396 | 志大才疏 |
| 397 | 攻心为上 |
| 399 | 求田问舍(元龙豪气) |
| 401 | 赤地千里 |
| 403 | 来者不拒 |
| 404 | 连篇累牍 |
| 406 | 远水不救近火 |
| 407 | 弃之如敝屣 |
| 408 | 言必有中(一仍旧贯) |
| 410 | 言人人殊 |
| 412 | 言不由衷 |
| 414 | 言犹在耳 |
| 416 | 识时务者为俊杰 |
| 418 | 怀瑾握瑜 |
| 420 | 佛头著粪 |
| 422 | 含饴弄孙 |
| 424 | 尾大不掉 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|------|
| 426 | 忍辱含垢 |
| 427 | 忍心害理 |
| 428 | 折戟沉沙 |
| 431 | 轩然大波 |
| 433 | 李代桃僵 |
| 435 | 走马看花 |
| 437 | 坚如磐石 |
| 440 | 鸡鹜争食 |
| 443 | 鸡犬升天 |
| 445 | 鸡虫得失 |
| 447 | 投畀豺虎 |
| 449 | 投桃报李 |
| 451 | 投鞭断流 |
| 454 | 穷而后工 |
| 456 | 兵不厌诈 |
| 458 | 兵不血刃 |
| 461 | 兵无常势 |
| 465 | 兵贵神速 |
| 467 | 利令智昏 |
| 470 | 吴牛喘月 |
| 472 | 妒贤嫉能 |
| 474 | 呆若木鸡 |
| 476 | 判若鸿沟 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|---------|
| 478 | 驴鸣犬吠 |
| 481 | 拒谏饰非 |
| 483 | 拒人于千里之外 |
| 485 | 含英咀华 |
| 487 | 秀外慧中 |
| 489 | 声价十倍 |
| 491 | 困兽犹斗 |
| 494 | 我行我素 |
| 496 | 饮冰茹檠 |



一匡天下

“一匡天下”见《论语·宪问》，意思是纠正混乱局势，使天下（全国）和平安定。“匡”，匡正、纠正的意思。

孔子对春秋五霸中的齐桓公、晋文公有不同的评价，认为晋文公诡诈、好使手段，不是个正派的人；而齐桓公则是个正派、不诡诈、不要手段的人。但子路、子贡和老师却有着不同的看法，特别是对辅佐齐桓公称霸诸侯的管仲，更是有着截然相反的看法。

子路说：“齐桓公杀了哥哥公子纠，公子纠的老师召忽自杀了，而管仲（也是公子纠的老师）却不去死。这恐怕不能说是仁德的表现吧？”

孔子说：“桓公九合诸侯（多次主持诸侯间的盟会）。停止了各诸侯国之间的争战，这可都是管仲的力量。这就是管仲的仁德，这就是管仲的仁德。”